अव्यय

अविकारी शब्द की परिभाषा

अव्यय वे शब्द हैं जिनमें कोई विकार या परिवर्तन नहीं आता, इसलिए इन्हें अविकारी शब्द भी कहते हैं। ये ऐसे शब्द होते हैं जिनके रुप में लिंग, वचन, कारक, काल, पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता है। ये हमेशा अपने मूल रुप में रहते हैं।

अव्यय निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं -

1. क्रिया विशेषण

2. सम्बन्धबोधक

3. समुच्चयबोधक

4. विस्मयादिबोधक

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण :- जो अव्यय क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं;

जैसे –

(i)	मेरे पास	बहुत कम	पैसे ही	बचे हैं।
		क्रिया विशेषण		क्रिया
(ii)	घर के		भीतर	कोई है।
			क्रिया विशेषण	क्रिया

(iii)	बाहर	कौन	आया है?
	क्रिया विशेषण		क्रिया
(iv)	रीमा	मधुर	गाती है।
		क्रिया विशेषण	क्रिया

यहाँ 'मधुर' शब्द 'गाती है' (क्रिया) की विशेषता बता रहा है। इसलिए यह क्रिया विशेषण शब्द है।

(v)	धीरे	बोलो।
	क्रिया विशेषण	क्रिया

यहाँ 'धीरे' क्रिया विशेषण है तथा 'बोलो' क्रिया है।

क्रिया विशेषण काल, स्थान, परिमाण और रीति के अनुसार होते हैं। इसी आधार पर इनको चार प्रकार में बाँटा गया है।

(1) कालवाचक क्रिया विशेषण

(2) स्थानवाचक क्रिया विशेषण

(3) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

(4) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(1) <u>कालवाचक क्रिया विशेषण</u> :- जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया के घटित होने के काल (समय) को बोध हो, वे शब्द कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द कहलाते हैं;

जैसे -

(i) गीता <u>अभी</u> आई है।

(ii) सूरज <u>प्रतिदिन</u> निकलता है।

(iii) तुम वहाँ से <u>कब</u> आओगे?

यहाँ पर अभी, प्रतिदिन तथा कब शब्द से क्रिया के घटने के समय का बोध हो रहा है इसलिए यहाँ कालवाचक क्रिया विशेषण है।

<u>**कालवाचक क्रिया विशेषण की पहचान:-** आज, कल, परसों, यहाँ, वहाँ, कहाँ, कब, जब, तब, सदा, प्रतिदिन, लगातार आदि कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द हैं।</u>

(2) <u>स्थानवाचक क्रिया विशेषण</u> :- ऐसे शब्द जो क्रिया के स्थान या दिशा को बोध कराएँ, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे -

(i) मोहन <u>अंदर</u> है।

(ii) तुम इधर-उधर मत जाओ।

(iii) मैं वहाँ पर तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी।

यहाँ अंदर, इधर-उधर तथा वहाँ शब्द के द्वारा क्रिया के स्थान का पता चल रहा है। इसलिए यहाँ स्थान वाचक क्रिया विशेषण है।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण की पहचान कैसे करें?

यहाँ, वहाँ, कहाँ, बाहर, भीतर, अंदर, नीचे, ऊपर, दूर, पास, दाएँ-बाएँ आदि स्थानवाचक क्रिया विशेषण हैं।

(3) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया की मात्रा (परिमाण) का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण शब्द कहते हैं; जैसे -

(i) वह बिलकुल थक गया है।

(ii) कम बोला करो।

(iii) चावल अधिक न खाया करो।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बिलकुल', 'कम' तथा 'अधिक' शब्द से क्रिया के परिमाण का पता चलता है। इसलिए यहाँ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण की पहचान:-

थोड़ा, कम, अल्प, अधिक, पर्याप्त, बहुत, काफ़ी, जितना, इतना आदि परिमाणवचक क्रिया विशेषण शब्द है।

(4) रीतिवाचक क्रिया विशेषण:- रीति का अर्थ है 'ढंग'। अर्थात जो कार्य के सम्पन्न होने की रीति को बताते है, वहाँ रीतिवाचक क्रिया विशेषण है; जैसे -

(i) वह धीरे-धीरे चला।

(ii) घोड़ा सरपट दौड़ा।

(iii) कार तेज़ चलती है।

यहाँ धीरे-धीरे, सरपट तथा तेज़ शब्द से कार्य होने के ढंग का बोध हो रहा है। इसलिए यहाँ रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण का पहचान:-

अवश्य, नि:संदेह, किसलिए, इसलिए, ही, भी, तो, तक, बहुधा, प्राय:, सहसा, अचानक, ध्यानपूर्वक, शीघ्र, एकाएक, कैसे, फटाफट, धड़ा-धड़, चुपचाप, मात्र, न ही, कभी नहीं, मत, क्यों, क्योंकि, ज़रुर, हाथोंहाथ, सुखपूर्वक, कदाचित, सचमुच आदि शब्द रीतिवाचक क्रिया विशेषण शब्द हैं।

सम्बंधबोधक अव्यय

सम्बन्ध बोधक अव्यय :- जैसा कि इसके नाम से ही प्रतीत होता है - 'सम्बन्ध का बोध कराने वाला'। अर्थात् सम्बन्ध बोधक शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के सम्बन्ध को व्यक्त करते हैं;

जैसे -

(i) खुशी के मारे वह पागल हो गया।

(ii) धन के बिना कोई नही पूछता।

(iii) मेरे घर के आगे बस स्टॉप है।

यहाँ के बिना, के मारे, के आगे शब्द सम्बन्ध बोधक अव्यय हैं। इसमें अव्यय शब्द से पहले कोई न कोई परसर्ग ज़रुर लगता है; जैसे - के, से, की, उसके आदि।

क्रिया विशेषण और सम्बन्ध बोधक में अंतर:- ऐसे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताने के साथ-साथ उसका सम्बन्ध संज्ञा या सर्वनाम के साथ बताते हैं तो सम्बन्ध बोधक होता है अन्यथा क्रिया विशेषण होता है; जैसे -

(i) मोहिनी लता से मधुर गाती है। (सम्बन्ध बोधक)

मोहिनी मधुर गाती है। (क्रिया विशेषण)

(ii) सुरभि छत के ऊपर बैठी है। (सम्बन्ध बोधक)

सुरभि ऊपर बैठी है। (क्रिया विशेषण)

समुच्चयबोधक अव्यय

समुच्चयबोधक अव्यय:- दो पद, वाक्यांश या उपवाक्यों को आपस में मिलाने वाले अव्यय शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे -

1. वह मेहनत करता रहा इसलिए सफल रहा।

2. बादल उमड़े और वर्षा हुई।

इसमें एवं, और, बल्कि, फिर भी, इसलिए, अन्यथा, फलतः, किंतु अथवा, या, मगर, परन्तु, पर, तथापि, यानि, मानो, ताकि, तो, जिससे, कि, क्योंकि, यद्यपि, चाहे, यदि आदि शब्द आते हैं।

विस्मयादिबोधक अव्यय

विस्मयादिबोधक अव्यय :- जिन शब्दों से हर्ष, शोक, घृणा, प्रशंसा, आश्चर्य आदि भावों का पता चलता है ऐसे अविकारी शब्द, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं; जैसे -

(i) वाह! कितना सुंदर गाना है।

(ii) ऐं! यह कैसे हो सकता है।

इसमें, वाह-वाह, धन्य है, आहा, शाबाश, बहुत अच्छा, क्या खूब, ओहो, त्राहि-त्राहि, उफ, हे राम, अरे, हा!, क्या ही!, क्या बोलू!, हाँ हाँ!, ठीक!, जीते रहो, फूलो-फलो!, छि:!, हट!, धिक!, थू!, ओफ!, परे हट!, होशियार!, बचो!, चुप!, अति सुंदर!, आदि शब्द आते हैं।

निपात:- जो शब्द किसी अन्य शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में बल भर देते हैं, वे निपात कहलाते हैं। इन्हें अवधारक अव्यय भी कहते हैं; जैसे -

मोहन ही जा रहा है।

वह दिल्ली भी जायेगा।

केवल दस रुपए मिलेंगे।

इसमें भी, ही, केवल, ने, मोहन, दिल्ली और दस रुपए पर जोर दिया है।